



**JBG-1901100202010102** Seat No. \_\_\_\_\_

**M. A. (Sem. I) (CBCS) (W.E.F.-2019) Examination**

December – 2019

**Sanskrit**

*(Vedantashastra)*

(i) वेदान्तपरिभाषा (प्रत्यक्ष परिच्छेदः)

(ii) पञ्चदशी – प्रकरण – 9

*(New Course)*

Time : 2½ Hours]

[Total Marks : 70

- |                |   |    |
|----------------|---|----|
| १              | अद्वैत वेदान्तनी उत्पत्ति पर नोध लभो.           | १४ |
| 1              | Write a note on rise of Advaita Vedanta.        | 14 |
| <b>अथवा/OR</b> |   |    |
| १              | अद्वैत वेदान्तना विकास पर नोध लभो.              | १४ |
| 1              | Write a note on development of Advaita Vedanta. | 14 |
| <b>अथवा/OR</b> |   |    |
| २              | केवलाद्वैत समझवो.                               | १४ |
| 2              | Explain Kevaladwaita.                           | 14 |
| <b>अथवा/OR</b> |   |    |
| २              | शुद्धाद्वैत समझवो.                              | १४ |
| 2              | Explain Shuddhadwaita.                          | 14 |
| <b>अथवा/OR</b> |   |    |
| ३              | प्रमाकरणं प्रमाणम्। – समझवो.                    | १४ |
| 3              | Explain - प्रमाकरणं प्रमाणम्.                   | 14 |
| <b>अथवा/OR</b> |   |    |
| ३              | सा च वृत्तिश्चतुर्विधा। – समझवो.                | १४ |
| 3              | Explain - सा च वृत्तिश्चतुर्विधा.               | 14 |

४	ब्रजन्तो जन्मनो जन्म लभन्ते नैव निर्वृतिम् – सभञ्जवो.	१४
4	Explain – ब्रजन्तो जन्मनो जन्म लभन्ते नैव निर्वृतिम्.	14

**अथवा/OR**

४	पञ्चकोशविवेक सभञ्जवो.	१४
4	Explain – पञ्चकोशविवेकः.	14

५	(अ) कोष्ठं पश्च अत्र परिच्छेदो अनुवाद करो :	७
---	---	---

(a)	Translate any one paragraph :	7
-----	-------------------------------	---

(१) ननु शुक्तौ रजतस्य प्रतिभाससमये प्रातिभासिकसत्त्वाभ्युपगमे नेदं रजतमिति त्रैकालिकनिषेध ज्ञानं न स्यात्, किन्त्विदानीम् इदं न रजतमिति, इदानीं घटः श्यामो नेतिवदिति चेत् न। न हि तत्र रजतत्वावच्छिन्नप्रतियोगिताकाभावो निषेधधीविषयः, किन्तु लौकिकपारमार्थिकत्वावच्छिन्नप्रातिभासिकरजतप्रतियोगिताकः, त्यधिकरणधर्मावच्छिन्नप्रतियोगिताकाभावाभ्युपगमात्।

(२) तत्र ध्राणरसनत्वगिन्द्रियाणि स्वस्थानस्थितान्येव गन्धरसस्पर्शोपलम्भाज्जनयन्ति। चक्षुःश्रोत्रे तु स्वत एव विषयदेशं गत्वा स्वस्वविषयं गृह्णीतः। श्रोत्रस्यापि चक्षुरादिवत् परिच्छिन्नतया भेर्याविदेशगमनसम्भवात्। अत एवानुभवो भेरीशब्दो मया श्रुत इति। वीचीतरङ्गादिन्यायेन कर्णशष्कुलीप्रदेशेऽनन्त-शब्दोत्पत्तिकल्पनागौरवम्, भेरीशब्दो मया श्रुत इति प्रत्यक्षस्य भ्रमत्वकल्पनागौरवं च स्यात्।

(ब)	कोष्ठं पश्च अत्र कारिका सभञ्जवो :	७
-----	-----------------------------------	---

(b)	Explain any one Karika :	7
-----	--------------------------	---

(१) नमः श्रीशङ्करानन्दगुरुपादाम्बुजन्मने।  
सविलासमहामोहग्राहग्रासैककर्मणे ॥

(२) तैरन्तः करणं सर्वैर्वृत्तिभेदेन तद्द्विधा।  
मनो विमर्शरूपं स्याद्बुद्धिः स्यान्निश्चयात्मिका ॥